

بہارِ شریعت

# شعاعِ سلک

قَالَ اللَّهُ تبارك و تعالیٰ  
فَمَنْ جَاءَكُمْ مِنَ الْمُدُفُوْرُوْكَاتِ فَمَا تَعْلَمُوْنَ  
وَمَا تَعْلَمُوْنَ فَمَا تَعْلَمُوْنَ فَمَا تَعْلَمُوْنَ

# ماہِجِ



مؤسسہ نور ہدایت حسینیہ غفران مآب لکھنؤ-۳

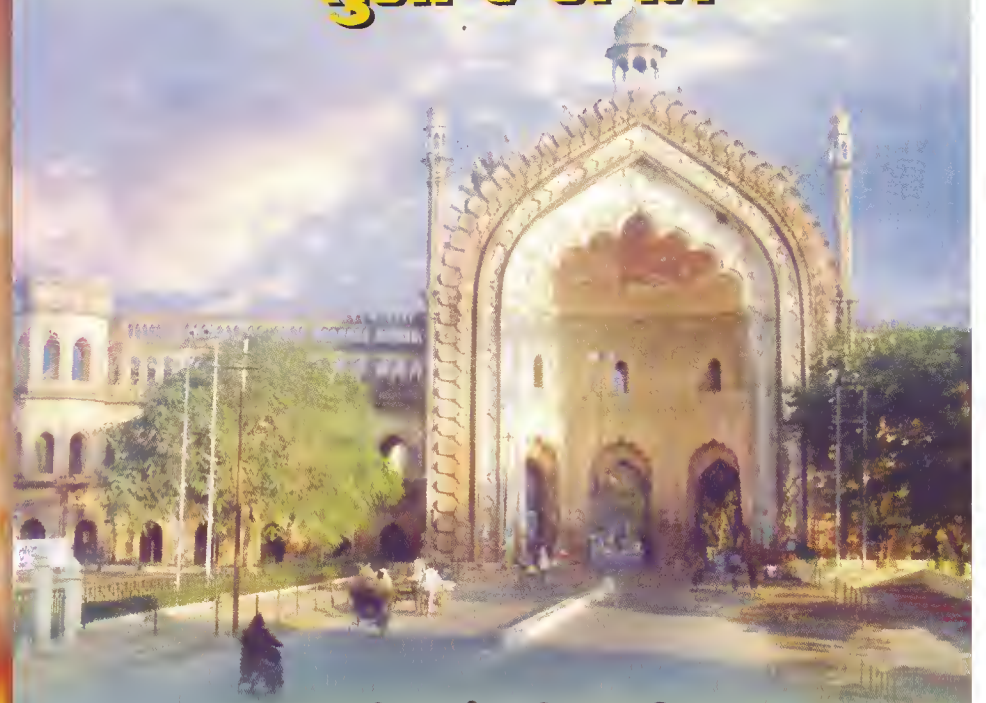
R.N.I. No. UPBIL/2004/13526  
Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2005-07

Monthly

## SHUA-E-AMAL

Lucknow

## शुआ-ए-अमल



हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका  
लखनऊ



**NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION**

Imambara Ghufuran Maab, Chowk  
LUCKNOW-3 (U.P.) INDIA  
Phone : 2252230

वर्ष—3

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526  
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2005-07

अंक 3

माह सितम्बर — 2006 लखनऊ  
नूर—ए—हिदायत फ़ाउण्डेशन की  
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

**शुआ-ए-अमल**  
“लखनऊ”

संरक्षक

मौलाना सै. कल्बे जवाद नक़वी साहिब

सम्पादक

सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

उप—सम्पादक

हैदर अली

कार्यकारिणी बोर्ड

प्रोफ़ेसर सै. हुसैन कमालुद्दीन अकबर, मु0 र0 आबिद,  
सैय्यद समीउल हसन वसीम, शबीब अकबर नक़वी

वार्षिक — 200 रु

मिलने का पता

कीमत — 20 रु

**नूर—ए—हिदायत फ़ाउण्डेशन**  
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड  
चौक लखनऊ — 3 (उ.प्र.) भारत फोन न0 0522—2252230

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ—ए—अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर—ए—हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ—3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै0 मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़ जायसी'।

## फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

न०	मज़मून	लेखक	पेज न०
1-	इमामे ज़माना (अ०) और महदवीयत का नज़रिय्या		
	इमादुल उलमा अल्लामा सैय्यद अली मुहम्मद नक़वी साहब		3
2-	फातिमा (स०) का लाल.....इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम		
	इमादुल उलमा अल्लामा सै मुहम्मद रज़ी साहब किब्ला		6
3-	इस्लाम में शादी के ऊँचे मक़सद		
	हुज्जतुल इस्लाम हुसैन अन्सारियान		9
4-	गुले नरजिस		
	मोहतरमा तनज़ीम ज़हरा नक़वी कनीज़ अकबरपुरी साहेबा		11
5-	मौलाना डाक्टर सैय्यद अली मुहम्मद नक़वी: एक परिचय		
	मु० र० आबिद		13
6-	मुख्य समाचार		
	इदारा		15

## अक़्वाले इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम

- ☐ किसी नेक काम को दिखावे के लिए अन्जाम मत दो और किसी नेक काम को शर्मिन्दगी की वजह से तर्क न करो।
- ☐ किसी इमारत में हराम चीज़ों को इस्तेमाल न करो कि वह वीरानी का बाअिस है।
- ☐ इंसान की इज़्ज़त इसमें है कि वह दूसरों का मोहताज न रहे।
- ☐ इज़्ज़त व ख़ुशी परहेज़गारी में है।

## **इमामे ज़माना (अ०)**

# **और महदवीयत का नज़रिया**

**इमादुल उलमा अल्लामा सैय्यद अली मुहम्मद नक़वी साहब**

260 हि० मुताबिक 803 ई० इमामे हसन असकरी (अ०) की शहादत के बाद मशीयते खुदावन्दी ने बारहवें इमाम हज़रत महदी (अ०) को परद-ए-ग़ैबत में रुपोश कर दिया ताकि नूर की मशाल उठाने वाले, जुल्मत की ताक़तों की साज़िश से महफूज़ रहे।

ग़ैबते इमाम के ज़माने को दो हिस्सों में तक्सीम किया जाता है। दौरे ग़ैबते सुग़रा जिसकी मुद्दत 260 हि० मुताबिक 873 ई० से 329 हि० मुताबिक 940 ई० तक है और और ग़ैबते कुबरा का ज़माना जो 329 हि० मुताबिक 940 ई० से शुरु होता है। ग़ैबते सुग़रा के दौरान इमाम अपने नायबों के ज़रिए (नायबीनी अरबआ) अपने पैरवों से राबता रखते थे मगर इसके बाद यह ज़ाहिरी राबता ख़त्म गया और इमाम मुकम्मल तौर पर परद-ए-ग़ैबत में चले गए एक मुनासिब मुद्दत तक के लिए, जिसे मशिय्यते खुदावन्दी तय करेगी उस वक़्त ज़हूर फरमाएँगे। हमारा अक़ीदा है कि इमामे महदी के ज़हूर के साथ ही दुनिया में हुकूमते अदल व निज़ामे इलाही कायम हो जाएगा और इस्लाम की हकीकी तालीमात मुकम्मल राज़ हो जाएँगी।

मुमकिन है यह सवाल पैदा हो कि क्या यह मुमकिन है कि किसी की इतनी लम्बी उम्र हो? जवाब यह है कि अइम्मा ऐसे इन्सान हैं जो खुदावन्दे आलम के ख़ास फ़ैज़ व इनायत के हामिल हैं। इसके हाल में कि वह इन्सान हैं ख़ास

ताक़त व इख़्तियारात के मालिक भी हैं और रुहानी बुलन्दी के लिहाज़ से मानवी रुतबे की इन्तिहाई बुलन्दियों पर फाएज़ हैं, अगर उन मुक़द्दस हस्तियों में से कोई आम आम इन्सानों के बरख़िलाफ़ ज़मान व मकान की क़ैद से खुदाए बुजुर्ग की ख़ास इनायत की वजह से आज़ाद हो तो कोई ताज्जुब की बात नहीं। अगर हम खुदावन्दे आलम की ज़ात, उसकी कुदरत और रुहानियत पर एतेक़ाद रखें तो हमारे लिए इस हकीक़त का समझना बिलकुल मुश्किल नहीं कि अइम्मा में से कोई सदियों तक मौत से महफूज़ रह सकता है। क्योंकि खुदावन्दे कुद्दूस जो मौत व ज़िन्दगी के क़ानून का ईजाद करने वाला है बिला शक़ किसी की हयात को मामूल से ज़्यादा अपनी मशिय्यत के मुताबिक़ तवील कर देने पर भी कादिर है। किसी मुसलमान के लिए ख़ास तौर से इस मामले में किसी शक़ व तरद्दुद की गुन्जाइश नहीं है क्योंकि कुर्आन की रु से हर मुसलमान का यह अक़ीदा है कि हज़रत ईसा (अ०) और हज़रत ख़िज़्र (अ०) आज भी ज़िन्दा हैं और हज़रत नूह (अ०) ने सैकड़ों साल की उम्र पायी।

## **ग़ैबत के ज़माने में इमाम (अ०) कौन सा किरदार अदा कर रहे हैं?**

मुमकिन है सवाल पैदा हो कि इमाम ग़ैबत के ज़माने में कौन सा किरदार अदा कर रहे हैं या क्या उनकी इमामत बेकार और ला हासिल



है? यह शक इमामत की हकीकत और फराएज़े इस्लाम से नावाक़फ़ियत की पैदावार है जैसा कि बार-बार बताया गया है कि इमाम सिर्फ़ सियासी, इज्तेमाओ और फ़िक्री रहबरी के फराएज़ अन्जाम नहीं देता बल्कि अहम मानवी, बातिनी और रुहानी फराएज़ भी अन्जाम देता है। इमाम दुनिया वालों के लिए फ़ैज़ाने इलाही का एक रास्ता है जो लोग इन्सानी और मानवी बुलन्दी के रास्तों पर चढ़ते चले जाते हैं इमाम उन रुहों की रहबरी करता है। इमाम के फराएज़ सिर्फ़ इज्तेमाओ और माददी ही नहीं हैं बल्कि बातिनी और रुहानी भी हैं। इमाम सिर्फ़ जिस्म ही से नहीं बल्कि रुह से भी ताल्लुक रखता है और मोमिनों की रहनुमाई करता है। इमाम के इस ऊँचे और बातिनी पहलू को अगर सामने रखा जाए तो इसके ज़रिए हम ग़ैबत के ज़माने में इमाम के किरदार को समझ सकते हैं।

कुआने मजीद में भी बातिनी रहबरी और हिदायत की तरफ़ इशारा मौजूद है और इल्यास(अ0) व ख़िज़र जैसे अम्बिया की तरफ़ इशारा किया गया है जो बातिनी तौर पर लोगों को नेकी की तरफ़ रहनुमाई करते हैं। इमाम आफ़ाके बातिन में भी मौजूद होता है।

जैसा कि इससे पहले भी कहा जा चुका है कि इमाम दुनिया वालों के लिए इनायत व फ़ैज़ाने रब्बानी का वसीला है। खुदा ने इन्सान को अपने फन्ने तख़लीक़ के शाहकार की हैसियत से पैदा किया है जिसमें बाज़ मलकूती सिफ़ात भी मौजूद हैं: “ख़लक़ल्लाहु आदम अला सूरतिही” लेकिन सिर्फ़ उन इन्सानों में जो पैग़म्बर और अइम्मा हैं अपनी अज़मते तख़लीक़ के हर रुख़, हर पहलू और हर खुसूसियत को जाहिर करता है। इस तरह अइम्मा ख़ालिक़ की ख़ल्लाक़ियत

की अज़मत का मुजस्समा होते हैं, जिस तरह एक तस्वीर बनाने वाला तमाम नक्श अपना शाहकार बनाने के लिए खींचता है उसी तरह ख़ालिक़ का एनात ने भी ज़मीन व आसमान इन ही मुक़द्दस हस्तियों के लिए ख़ल्क़ किये हैं जैसा कि हदीसे कुदसी में आया है कि:— “ऐ मुहम्मद(स0)! अगर तुम न होते तो मैं यह ज़मीन व आसमान पैदा न करता।” ऐसी सूरत में तमाम अइम्मा भी इसी “हकीकते मुहम्मदी” से हैं जैसा कि हदीस में आया है कि: “हमारा पहला भी मुहम्मद, दरमियानी भी मुहम्मद और आख़री भी मुहम्मद है।” इस रु से सारे अइम्मा हदीसे कुदसी के इस जुमले के मिस्दाक़ हैं।

इसलिए हर दौर और हर ज़माने में बस्ती की बका का सबब और फ़ैज़े खुदावन्दी के इन्सानों तक पहुँचने का ज़रिया हैं।

इमाम परद-ए-ग़ैबत में वह खुर्शीद हैं कि जिसके चारो तरफ़ ज़मीन, चाँद और सितारे गर्दिश कर रहे हैं, जानकर और अन्जाने में भी तमाम मौजूदात इमाम की ज़ात से नूरे हिदायत हासिल करते हैं, इसी वजह से इमामे रिज़ा (अ0) की मशहूर हदीस में आया है कि:— “इमाम खुर्शीद की तरह चमकता है कि तमाम जहान को रौशन करता है और वह उन बुलन्दियों पर जलवागर है जहाँ न नज़र उसे पा सकती है न हवासे ख़म्सा उसे छू सकते हैं।

## फ़ल्सफ़-ए-ग़ैबत

महदवीयत के नज़रिये की बुनियाद क्या है? इस नज़रिये को समझने के लिए ज़रूरी है कि पहले हम फ़ल्सफ़-ए-तारीख़ और हस्ती के मुताल्लिक़ इस्लामी नुक़त-ए-नज़र को पहचानें। तारीख़ की तरक्की पज़ीरी और दुनिया में इन्सानी

ज़िन्दगी की आजमाइशी कैफियत और इन्सान के इन्तिखाब और आज़ाद इरादे के मालिक होने के इस्लामी नुक्त-ए-नज़र की रौशनी में हम अम्बिया की बेअसत की ज़रूरत, ख़त्मे नुबुव्वत का राज़ और बारह अइम्मा की ताओन के असबाब और हज़रत महदी (अ0) की ग़ैबत और दोबारा ज़हूर के फलसफ़े को समझ सकते हैं। इस्लामी नुक्त-ए-नज़र से खुदा ने इन्सान को ऐसे मौजूद के तौर पर बनाया है जो अशरफ़ुल मख़लूक़ात और “इरादा”, “तअक्कुल”, “ईमान” और “इशराक़” यानी इल्हाम का मालिक है। खुदावन्दे तआला ने इन्सान को “इरादा” की आज़ादी और इन्तेखाब की तवानाई से नवाज़ा है। जो एक तरफ़ तो खुदा की अज़ीम इनायत हैं मगर दूसरी तरफ़ ऐसी बड़ी ज़िम्मेदारी दी जिसे कुबूल करने से पहाड़ों, ज़मीन और आसमान ने इन्कार कर दिया था। अगर इरादे की आज़ादी और इन्तेखाब की तवानाई न हो तो इन्सान जानवर और चौपायों से भी नीचे गिर जाए।

मगर इन्तेखाब उस वक़्त कारआमद होता है जब राहे रास्त वाज़ेह होती है। खुदावन्दे आलम ने जिसकी इनायत उसके वुजूद का लाज़मा है “नुबुव्वत” का सिलसिला इसी मक़सद के हुसूल के लिए नीज़ इन्सान की सआदत और नजात के ज़राए फ़राहम करने के लिए ही कायम किया। इन्सान की रुहानी तरक्की के साथ-साथ एक के बाद एक पैग़म्बर भेजे गए और मुख़तलिफ़ हकाएक के चेहरे बेनकाब किये यहाँ तक कि हज़रत मुहम्मद की बेअसत और नुजूले कुर्आन के साथ ही “हकीक़त” और “पैग़ाम” मुकम्मल तौर पर बन्दों तक पहुँच गए, दीन की तकमील हो गई, उसके अरकान और असली खुतूत तैय हो गए। चूँकि “पैग़ाम” पहुँचाने का काम मुकम्मल हो

चुका था इसलिए हज़रत मुहम्मद (स0) के साथ ही बेअसते अम्बिया का सिलसिला ख़त्म हो गया। और हज़रत ख़ातमुल अम्बिया (स0) की रिसालत हर ज़माने के लिए लाज़मी तौर पर काबिले पैरवी हो गई और इसके बाद से क़यामत तक तमाम इन्सानों की ज़िम्मेदारी है कि पैग़म्बरे इस्लाम (स0) की पैरवी करें।

इसके बाद शरह व तफ़सीर और इज़रा व निफाज़ का मरहला सामने आता है कुर्आन में “पयाम” यकज़ा पहुँच गया मगर आम इन्सानों के लिए कलामे इलाही की बारीकियों का समझना मुमकिन न था इसलिए ज़रूरत थी ऐसे खुदाई अफ़राद की जो एक तरफ़ तो हदीसों के ज़रिए पयामे कुर्आनी के तमाम गोशों और बारीकियों की तफ़सीर व तशरीह और सीरते पैग़म्बर की तफ़सील पेश करें दूसरी तरह अमली तौर पर सबक़ दें कि मुख़तलिफ़ हालात में इन्सान किस तरह की हिकमते अमली इस्तियार करे। इसके अलावा कुर्आन के साथ-साथ ज़रूरत थी कि कुछ ऐसे अफ़राद हों जो इन्सानों के लिए “उसव-ए-जावेद” और अमली नमूना हों, इस वजह से खुदा ने “इमामत” का सिलसिला कायम किया।

लेकिन इन्सानों की तरबियत (नुबुव्वते आम्म:) और खुदाई “पयाम” पूरे तौर पर पहुँच जाने के बाद (नुबुव्वते ख़ास्स:) जब मुअल्लिमाने इलाही और रहबरो ने इसकी (मन्सबे इमामत की) तशरीह कर दी तो मशियते खुदावन्दी का रुख़ उस तरफ़ हुआ कि एक इमाम को परद-ए-ग़ैबत में रुपोश कर दे ताकि पैग़म्बरों और पिछले इमामों की तालीमात की रोशनी में और अपनी अक़ल की मदद और फ़िक्री तवानाई के ज़रिए अपने इज्तेहाद को सही तौर पर पूरा करें। ग़ैबत

**बक़िया .....पेज 8 पर**

# फातिमा (स०) का लाल

## इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम

इमादुल उलमा अल्लामा सै० मुहम्मद रज़ी साहब किब्ला

इन्सानी तारीख़ के हर दौर में कुछ ऐसी चुनी हुई हस्तियाँ आती रही हैं जिन्होंने दयानत और सदाक़त की हिफाज़त में अपनी जानें कुर्बान की हैं और अल्लाह की राह पर अपनी ज़िन्दगी का सारा समान लुटा दिया। अगर ऐसे दीनी सरफ़रोश नंगे सर मैदाने आज़माइश व परेशानी में न निकलते रहते तो यह सारी दुनिया एक आग का गढ़ा बन जाती जहाँ जिहालत व हैवानियत के शोले इन्सानियत और हक़ परस्ती की तमाम क़द्रों को जलाकर हमेशा के लिए फना कर देते। इस्लाम चूँकि फलाहे दुनियवी और नजाते उख़रवी की अलमबरदार है और बजा तौर पर इन्सानियत की हर मुश्किल का हल है इसलिए उसकी बका खुद इन्सानी इक़दार की बका है और उसकी मौत और ज़वाल खुद इन्सानियत की मौत और ज़वाल है और यह बका सिर्फ़ उसी वक़्त मुमकिन हो सकती है जब इन क़द्रों की हिफाज़त करने वाले पैदा होते रहें और उनकी राह में कुर्बानियाँ पेश करते रहें। फ़र्ज़न्दे रसूल हज़रत इमामे हुसैन (अ०) की बेमिसाल कुर्बानी भी इसी सिलसिले की एक अहम कड़ी है और मक़सद यही था कि जिस तन्हा वसीले पर इन्सान की फलाह व नजात का इन्हेसार है इसे फना होने से बचाया जा सके और दुनिया की गुमराह ताक़तें इसकी जड़ों को न काट सकें, हक़ और बातिल अलग-अलग नज़र आने लगे और बातिल की हक़ के साथ मिलाने की जो गहरी साज़िश की गई थी वह हमेशा के

लिये बेनकाब हो जाए और नसले इन्सानी की हक़ीक़त को समझने और हक़ को जानने वाली निगाहें आसानी से देख सकें कि इस्लाम का असली चेहरा कैसा है। दूसरी बात यह भी बड़ी अहम है कि यह कुर्बानी कोई इत्तेफ़ाकी हादसा नहीं थी जिसकी लोगों को या खुद कुर्बानी पेश करने वालों को पहले से ख़बर न हो बल्कि इससे बहुत लोग पहले ही से वाकिफ़ थे और सरवरे काएनात (स०) ने उसकी बार-बार पेशीनगोई फरमाकर असहाबे किबार और अहलेबैते अतहार (अ०) को इससे पूरी तरह बाख़बर कर दिया था। किसी क़ौम के आम सियासी और अख़लाकी हालात का हमेशा एक ख़ास धारा हुआ करता है और बड़ी हद तक उसके नतीजे भी यकीनी हुआ करते हैं और वाक़ेआत व हालात के इस धारे पर भरोसा करके बहुत सी बातें मुसतक़बिल के मुताल्लिक कही भी जा सकती हैं लेकिन बहर हाल यह ज़रूरी तो नहीं है कि वह धारा कोई नया रुख़ इख़्तियार न करे और वह पेशीनगोइयाँ बदल न सकें। मगर यह सब तो आम ज़हनी सतह की बातें हैं। लेकिन जहाँ तक वही-ए-इलाही का ताल्लुक है उसकी तो बात ही दूसरी है, वहाँ जो कुछ भी बताया जाता है उसकी बुनियाद न बदलने वाले और ग़ैर मुतज़लज़ल तकवीनी ज़ाब्तों पर होती है और इल्मे खुदावन्दी उन ज़ाब्तों और उनके नतीजों के न बदलने की ज़मानत देता है। वह एक लमहा के लिए भी इसका पाबन्द नहीं

होता कि ज़ाहिरी या बातिनी हालात का सिलसिला कायम रहे और हादसात व वाक़ेआत की तरतीब और धारा एक हाल पर जारी और बाकी रहे या दूसरी शकलें और दूसरे रुख़ इख़्तियार कर ले। यकीनन वाक़ेअ-ए-क़र्बला कुछ ख़ास अख़लाकी और सियासी तारीख़ी हालात का अचानक इत्तेफ़ाकी नतीजा ही कहा जा सकता था अगर यहाँ सवाल सिर्फ़ हालात ही का होता और इस कुर्बानी का बार-बार ज़िक्र सरवरे काएनात (स0) की ज़बाने पाक पर और आपसे पहले अबुल अम्बिया हज़रत आदम (अ0) से लेकर हर नबी और हर वसी की ज़बान पर और हर दौर के इलाही सहीफों में न होता। इसका मतलब यह हुआ कि वाक़ेअ-ए-क़र्बला था तो तारीख़ी हालात के सिलसिले का ही नतीजा और तकवीनियात के तकाज़ों ही के मुताबिक़ मगर यह सिर्फ़ इत्तेफ़ाकी और अचानक सामने नहीं आया था बल्कि अज़ल से ही इस राज़ से खुदा के ख़ास बन्दों को बाख़बर कर दिया गया था जो हालात के उस धारे से और उस अज़ीम नतीजे से पूरी तरह वाकिफ़ थे। यहाँ पर आलम के तकवीनी निज़ाम और उसके ज़वाबित से मुताल्लिक़ सिर्फ़ इतना ही समझ लेना काफी होगा कि इस निज़ाम का ख़ालिक तो यकीनन अल्लाह है मगर उसके इरादे को इस निज़ाम के नतीजों में कोई दख़ल नहीं है। मिसाल के तौर पर जैसे कोई आग में गिरेगा तो जल जाएगा और ज़हर खाएगा तो मर जाएगा। इस किस्म के इन्फ़िरादी तास्सुरात और नताएज का सीधा ताल्लुक़ तकवीनी नज़्म व ज़ब्त से ही है न कि इराद-ए-ख़ुदावन्दी से वरना जज़ा और सज़ा और मआद का कोई तसव्वुर ही बाकी न रहेगा अलबत्ता इन नताएज व आमाल से खुदा की रिज़ामन्दी या नाराज़ी का ज़रूर ताल्लुक़

होता है मगर वह ताल्लुक़ इरादे की हद तक नहीं होता दूसरे यह कि आलमी हालात के इत्तेफ़ाकी नताएज अल्लाह के लिए अजनबी नहीं होते, वह हर चीज़ से वाकिफ़ है। उनकी अजनबियत और उनके इत्तेफ़ाकी हवादिस होने की हैसियत सिर्फ़ हमारे नाक़िस इल्म के एतेबार से हुआ करती है। ग़र्ज़ वाक़ेअ-ए-क़र्बला उस वक़्त के बहुत से मुसलमानों के लिए खुद हज़रत इमामे हुसैन (अ0) और आपके साथियों के लिए अजनबी और अचानक हैसियत नहीं रखता था अगरचे यह तारीख़ी हालात के तसलसुल ही का नतीजा था। इस तरह इमामे (अ0) आली मक़ाम और आपके वफ़ादार साथियों के ज़ब्ब-ए-तसलीम व रिज़ा, अज़्म व इस्तेक़लाल और सब्र व सिबात की हैसियत इस क़द्र बुलन्द और शान वाली हो जाती है जिसकी कोई दूसरी मिसाल नहीं मिलती। सरवरे काएनात (स0) ने सबसे पहले उस वाक़ेए का ज़िक्र अपनी चहीती बेटी हज़रत फातिमा ज़हरा (स0) से उस वक़्त किया था जब इमामे हुसैन (अ0) की विलादत हुई थी और बच्चे को हुजूर की गोद में दिया गया था। आम तौर पर ऐसे मौक़े पर लोग खुश हुआ करते हैं मगर हज़रत रिसालतमाब (स0) की आखों में आसू आ गए और बेटी से होने वाला वाक़ेआ बयान फरमा दिया।

कुछ अरसे बाद आँहज़रत ने उम्मुलमोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा को कुछ मिट्टी अता की थी और बताया था कि यह क़र्बला की ख़ाक़ है और क़र्बला ही हुसैन (अ0) के क़त्ल होने की जगह है फिर हुक्म दिया था कि रसूल की बीवी इस मिट्टी को हिफाज़त से रखें यहाँ तक कि जब वह वक़्त आयगा और हुसैन (अ0) शहीद होंगे तो यह मिट्टी अपने आप सुर्ख़ हो जाएगी। उम्मुलमोमिनीन ने उस ख़ाक़



को कलेजे से लगाकर रखा था। आखिर 61 हि० आ गया इमामे हुसैन (अ०) कर्बला पहुँच चुके थे। फिर आशूर का सूरज कर्बला के खूनी उफुक से निकला और बुलन्द होकर ढलने लगा। यह कयामत के सूरज से कम न था। अस्त्र का वक्त आ गया। मअरक-ए-कर्बला अपने आखरी नुकते पर पहुँच चुका है। हज़रत उम्मे सलमा मदीने ही में थीं। अस्त्र के वक्त आँख लग गई। रखाब में देखा, सरवरे दो आलम (स०) तशरीफ लाए हैं। चेहर-ए-मुबारक पर बे इन्तिहा रन्ज व ग़म के आसार हैं। महासिने मुबारक और सरे अक़दस पर खाक पड़ी हुई है। आँखों से मुसलसल आँसू बरस रहे हैं। उम्मे सलमा यह अन्दोहनाक मन्ज़र देखकर बर्दाश्त न कर सकी और खुद भी रोने

लगीं फिर अर्ज़ की! ऐ खुदा के आखरी रसूल! (स०) आप इतने रंजीदा क्यों हैं। आप पर कौन सी बात गराँ गुज़र गई। रसूलुल्लाह (स०) ने फरमाया:-

उम्मे सलमा! मैं अभी-अभी हुसैन को शहीद होते हुए देख आया हूँ। रसूल (स०) की बीवी की आँख खुल गई। घबराई हुई और काँपती हुई उस हुजरे की तरफ दौड़ी जहाँ पैग़म्बर (स०) की अता की हुई मिट्टी एक शीशे में रखी हुई थी। उम्मुलमोमिनीन ने उसे गौर से देखकर रोना शुरू कर दिया क्योंकि अब इस शीशे में मिट्टी न थी बल्कि उससे तो ताज़ा खून उबल रहा था।

□□□

### बक़िया इमामे ज़माना (अ०) और महदवीयत.....

के बाद का दौर "इज्तेहाद" का दौर है। इन्सानों को चाहिए कि वह अपने इल्म और अपनी अक़ल का सही इस्तेमाल करें ताकि वही और सीरत पैग़म्बर व अइम्मा की शम-ए-हिदायत और मशाले रहबरी से अपने मसाएल के हल के सिलसिले में फाएदा हासिल करें। आखिरकार मशिय्यते इलाही दोबारा इमाम (अ०) को परद-ए-ग़ैबत से ज़ाहिर करेगी। ताकि दुनिया में नज़रियाती समाज और मिसाली निज़ाम कायम हो। इन्सान दौरे ग़ैबत में एक इम्तिहानी और आजमाइशी मरहले से दोचार है, इसके बाद खुदाई मुअल्लिम दोबारा ज़ाहिर होगा और सही को ग़लत से और हक़ को बातिल से अलग कर देगा।

हम इस हिदायत के पूरे खुदाई इन्तिज़ाम

को एक स्कूल से तश्बीह दे सकते हैं, गोया पहले मुख़्तलिफ़ दर्जों की तालीम मुकम्मल कराई गई। (अम्बिया की बेअ्सत) और तहरीरी रहनुमाई भेजी गई (वही) आखरी दर्जे की नज़रियाती तकमील शरीअत की तकमील की सूरत में की गई (पैग़म्बरे इस्लाम की बेअ्सत) फिर ग्यारह इमामों ने उस तालीम को अमली तौर पर करके दिखाया। (इमामत का दौर) इसके बाद मुअल्लिम को ग़ैबत के पर्दे में छुपा लिया गया और तालिबे इल्मों को छोड़ दिया गया कि अक़द व समझ और इस्तेदाद के बल बूते पर इम्तिहान दें (ग़ैबत का ज़माना) इसके बाद मुअल्लिम दोबारा ज़ाहिर होंगे और सही जवाब की अमली तौर पर निशानदही फरमाएँगे (ज़हूर) इस तश्बीह के ज़रिए हम ग़ैबत के फलसफ़े को थोड़ा सा समझ सकते हैं।

□□□

**“खुदा तुम लोगों की जिन्दगी आसान करना चाहता है।”**

(सूर-ए-निसा)

## इस्लाम में शादी के ऊँचे मक़सद

(पिछले शुमारे से आगे)

### घर और घरवालों के लिए जतन

शादी करने, बियाहता जिन्दगी बिताने और बच्चों के कामों पर ध्यान देने से आदमी पर दुनिया के सकारात्मक (Positive) असर पड़ते हैं। इसके अलावा आध्यात्मिकता भी अपनी जगह बनाती है। बीवी बच्चों के खर्चे पूरे करना इस्लाम की नज़र से खुदा के लिए बड़ी से बड़ी इबादत है। मासूम (अ0) से यहाँ तक मिलता है: “जो आदमी अपने बीवी बच्चों के लिए जतन करता है वह खुदा के रास्ते में जिहाद करने वाला जैसा है।”

इसमें कोई शक नहीं कि बीवी बच्चों के हक़ (उनके प्रति कर्तव्यों को) पूरे करना और उनकी आध्यात्मिक कामों को अहमियत देना और मियाँ-बीवी का एक-दूसरे के हक़ पूरे करना बहुत कठिन काम है। पर यह खुदा के हुक्म पर चलने का नाम है। उनकी दुनियाई ज़रूरतों को पूरा करना भी इबादत है और आखिरत में अच्छा बदला, पुण्य और सवाब की वजह है। घर और घरवालों को बुराई और बिगाड़ से अलग रखना, बीवी बच्चों की बाढ़ उठान और पालने पोसने के लिए जतन करना बहुत बड़ा काम है और खुदा की बेहतरीन इबादत है। बच्चों को पालकर नेक बनाकर समाज के हवाले करना खुदा की खुशी

हुज्जतुल इस्लाम प्रो0 हुसैन अन्सारियान  
अनुवादक : मु0 र0 आबिद

की वजह है।

इमाम ज़ैनुल आबिदीन (अ0) फरमाते हैं: “जो आदमी भी अपनी बच्चों को पूरी तरह दुनियाई और रूहानी भोजन देता है दूसरों से ज़्यादा खुदा के करीब होता है।”

हर हाल में समाज घर से ही बनता है। वकील, वज़ीर, राष्ट्रपति और मज़दूर भी घर से ही जुड़े होते हैं। उनके पालने वाले वही होते हैं जिनके हाथों में घर की बाग़डोर होती है। घर की मिसाल एक ज़मीन जैसी है। अगर ज़मीन सिचाई से दूर है तो वह बन्जर है जिसमें फल फूल नहीं उगते। अगर ज़मीन सिचाई और अपनी असलियत से मिली हुई है तो फल-फूल की उम्मीद करना अक्ल की बात होगी।

पहले चरण या पड़ाव में अच्छाई और बुराई, शगुन अपशगुन, माँ-बाप की तरफ से ही इन्सान में आते हैं। मगर माँ-बाप औलाद की अच्छाई के लिए जतन करेंगे तो इसकी गिनती बड़ी इबादत में होगी और वे शादी के हमेशा रहने वाले फायदों को पायेंगे। अगर वे उनकी बुराई और निकम्मेपन के कारण बनते हैं तो मानो उन्होंने शादी के पाक पौधे से कोई फल नहीं लिया और अपने को तबाही के गड्ढे में झोंक दिया। इसीलिए रसूल (स0) की एक हदीस है:

“बुरे भागों वाला माँ के पेट से ही ऐसा पैदा होता है और शुभ-शुगुन, अच्छी किसमत वाला माँ के पेट से ही ऐसा पैदा होता है।”<sup>(1)</sup>

## शादी का मक़सद उँचा होना चाहिए

आदमी को चाहिए कि पाक मतलब और रूहानी मक़सद से शादी करें, जीवन साथी की भलाई और बच्चों को रूहानी पालन पोषण के लिए शादी करे। मर्द औरत, खुद को एक बड़ी इबादत के लिए तैयार करना चाहिए। उन्हें खुदा की खुशी के लिए शादी करना चाहिए। उन्हें यह मालूम होना चाहिए कि वे बच्चों के जन्म देने के मामले में खुदा की एक अमानत के रखने वाले हैं। जनाबे सैय्यदा के पैदा होने से ठीक पहले खुदा ने रसूल (स0) को 40 रोज़े रखने का हुक्म दिया था। चालीसवें दिन जन्नत के मेवे से अप्तार किया तभी जनाबे सैय्यदा माँ के पेट में आई।

शादी के सिलसिले में आखों पर भरोसा न कीजिए। सेक्स के लिए ही शादी न करे। माल, पैसा, ऊपरी दिखावे की शान, कुर्सी के पद पाने के लिए शादी नहीं होनी चाहिए। इसका मक़सद खूबसूरती और दिखावे वाली चीज़ें न होना चाहिए क्योंकि इन का फल अच्छा नहीं निकलता। इससे बहुत कम फ़ायदा होता है। शादी का असली मक़सद खुदा की खुशी, इबादत, रूहानियत, जीवन साथी के हक़ (दायित्व) का लिहाज़ करना और नेक बच्चों को पालना होना चाहिए। इससे शादी के फ़ायदे हमेशा रहने वाले हो जाते हैं। हलाल

और जायज़ मज़े उठाने को आसमानी और ऊँचे मक़सद के आधीन (नीचे) कर देना चाहिए ताकि सही मज़ा उठा सकें और सवाब पा सकें। खुदा की खुशी को ध्यान में रखकर शादी होगी तो तलाक़ की नौबत न आएगी। खुदाई रिश्ता और जोड़ हमेशा वाला होता है। जो खुदा के लिए शादी करता है वह अपने जीवन साथी को ज़रा भी दुख नहीं पहुँचाता और उसके हक़ (दायित्वों) को पूरी तरह निभाता है। मुसलमान मियाँ-बीवी को चाहिए कि हज़रत अली (अ0) और जनाबे सैय्यदा की शादी को अपने लिए नमूना बनायें। यह शादी खुदा की खुशी के लिए हुई इसमें खुदाई वाले मक़सद ही सामने थे; इसके फल भी नेक पाक हुए। शिया रिवायतों से यह शादी इन आयतों की तावील (माने मतलब निकालना) है:

“कभी दो नदियाँ मिलती हैं इन दोनों के बीच उसी ने दो नदियाँ बहायीं जो आपस में मिल जाती हैं। उनके बीच आड़ है जिससे वे पार बढ़ती नहीं (एक दूसरे की सीमा में नहीं जाती)। .... इन दोनों से मोती और मूँगे निकलते हैं।

(सूर-ए-रहमान, आयत-19, 20, 22)

मोती मूँगे से मुराद (संज्ञा) इमामे हसन व हुसैन (अ0) हैं।

अगर शादी में अनचाही रस्मों, शैतानी बातों यानि जिहालत की तहज़ीब (संस्कृति) से अलगाव न होगा (जिन बातों का रसूल (स0) ने ख़त्म करने का हुक्म दिया था) तो बुराइयाँ फैल जायेंगी और इसका फल कड़वा होगा।

**(जारी)**

1— इसका मतलब यह न निकालना चाहिए कि खुदा पहले से ही भाग्य बना देता है या बिगाड़ देता है। इसके सीधे माने हैं वे अच्छाई या बुराई जो Hereditary या Genetic (जन्म-जात) होती है वह माँ के पेट से ही मिल जाती है। उनमें भी अपने कर्म से सुधार या निखार (या बिगाड़) ही किया जा सकता है।

# गुले नरजिस

मोहतरमा तनज़ीम ज़हरा नक़वी कनीज़ अकबपुरी साहेबा

महकी फ़िज़ाए खुल्द तो कहने लगे मलक  
पत्तों की आड़ में गुले नरजिस छुपा न हो  
किस क़दर बा अज़मत होगा वह इन्सान जो  
तमाम खूबियों का सरचश्मा और तमाम अच्छे लोगों का  
वारिस है। सारी अज़मतों का मजमुआ, सारे अम्बिया  
व औलिया का आइन-ए-हयात, मासूमीन  
अलैहिमुस्सलाम की इस्मत का का पासदार, मज़हरे  
ईमान और जलव-ए-अमल है। हादियों और रहनुमाओं  
की हिदायत और ज़िम्मेदारियों को बेहतरीन नतीजे  
तक पहुँचाने वाला, सीरते मुस्तफवी और सूरते मुरतज़वी  
का हामिल है। अम्बिया व अइम्मा (अ0) की तबलीगात  
के अन्जाम तक पहुँचाने वाला, खुदा के भेजे और बनाए  
हुए अकली व फितरी क़वानीन को नश्च करने वाला,  
और ज़मीन को फिस्क व फुज़ूर के बदले अदल व  
इन्साफ से पुर करने वाला है। हमारा ख़ालिसाना व  
मुख़लिसाना दुरुद व सलाम हो मुहम्मद व आले मुहम्मद  
पर ख़ास तौर से बकिय्यतुल्लाहिल आजम पर।

कितना बा बरकत होगा वह दिन, कितनी बा  
अहमियत होगी वह तारीख़, कितनी अजीम होगी वह  
घड़ी, कितनी खुशगवार होगी वह फ़िज़ा जब 15  
शाबानुल मुअज़्ज़म 255 हि0 या 256 हि0 को हज़रत  
मुहम्मद महदी (अ0) काएम (अज0) आले मुहम्मद की  
विलादत बा सआदत हुई होगी।

जनाबे हकीमा ख़ातून ने रोज़े अब्बल ही  
एजाज़े इमामत को पहचान लिया। मख़फ़ी पैदाइश का  
होना इस्मत का एजाज़ है।

आप फरमाती हैं:-

मैंने देखा बच्चा सिजदे में है और कह रहा  
है:- “अश्हदु अन ला इलाहा इल लल्लाह व अन्ना  
जददी मुहम्मदन रसूलुल्लाह, व अन्ना अलिय्यव्व  
वलियुल्लाह।” और इसी सूरत से तमाम अइम्मा के  
नाम बयान किये यहाँ तक कि आपकी नौबत आयी तो

फरमाया:- “खुदाया मेरे अम्र को नतीजा बरख़्शा बना,  
मेरे क़दम साबित रख और ज़मीन को अदल व इन्साफ  
से भर दे।”

उसके बाद इमामे हसन असकरी (अ0) ने  
बच्चे को तलब किया आगोशे उलफ़त में लेकर  
फरमाया:- “खुदा के हुक्म से गुफ़्तगू करो।” बच्चे ने  
कहा “अऊजुबिल्लाही मिनशशैतानिर रजीम,  
बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम, वनजअलुहुम अइम्मतन  
वनजअलुहुमुल वारिसीन।” “और हमारा इरादा है कि  
ज़मीन पर कमज़ोर बना दिये जाने वालों पर एहसान  
करें और उन्हें ज़मीन पर इमाम और वारिस क़रार दें।”

हज़रते वली-ए-अम्र का पाक नाम “मुहम्मद”  
है और कुन्नियते मुबारका “अबुलकासिम” है चुनानचे  
पैग़म्बरे इस्लाम ने फरमाया कि:- हमारे आख़री जानशीन  
का नाम मेरे नाम पर और उसकी कुन्नियत भी मेरी  
कुन्नियत होगी।

आपके लक़ब: हुज़्ज़त, कायम, साहिबुज़्ज़मान,  
बकिय्यतुल्लाह वगैरा हैं लेकिन आपका सबसे मशहूर  
लक़ब “महदी” है। आपके वालिदे बुजुर्ग, जिनको  
हज़रत इमामे हसन असकरी (अ0) के नाम से याद  
किया जाता है, हमारे ग़्यारहवें इमाम हैं और आपकी  
बुजुर्ग माँ के मुख़तलिफ़ नाम जैसे सोसन, रेहाना,  
सैक़ल, किताबों में बताये गये हैं मगर ज़ियादा मशहूर  
नाम नरजिस ख़ातून है।

आपकी पैदाइश हज़रत मूसा (अ0) की तरह  
छुपी रही है ताकि लोग शक व शुब्ह में न पड़ें ख़ास  
तौर से ईमान वाले पसोपेश में न आएँ इसलिए तमाम  
अम्बिया व अइम्मा ख़ास तौर से इमामे हसन असकरी  
(अ0) ने बाज़ राज़दार और कामिलुल ईमान अरहाब से  
आपकी पहचान हर तरह से करवायी है। इमामे हसन  
असकरी (अ0) ने अपनी शहादत से पहले फरमाया  
कि:- “महदी जो मेरा फरज़न्द है मेरे बाद इमाम और



हुज्जते खुदा होगा। सबसे ज़्यादा हर एतेबार से पैगम्बरे इस्लाम (स0) से मिलता हुआ होगा उसको खुदा ग़ैबत में रखेगा और ग़ैबत भी लम्बी होगी।"

इमामे महदी के लिए दो ग़ैबतें हैं एक ग़ैबते सुगरा और दूसरी ग़ैबते कुबरा। आपकी ग़ैबत हकीकतन एक राजे इलाही है फिर भी मुहक्किन ने रिवायात से इस्तेफादा करते हुए चन्द वजहें बयान की हैं:-

1- दुश्मन से आपकी जान महफूज़ रह सके और बकिया मासूमीन (अ0) की तरह मकतूल व मज़लूम आप न हों ताकि ज़मीन हुज्जते खुदा से ख़ाली न रहे।

2- ईमान के इम्तियाज़ात बयान हो सकें। हकीकी और असली शीआ और इस्लाम के वाक़्अी चेहरे सामने आ सकें।

3- आप हरगिज़ किसी हाकिम ज़ालिम व जाबिर की बैअत न करें अगरचे तकय्या ही क्यों न हो। खुदावन्दे आलम का वादा यह है कि दीने इस्लाम को तमाम अदियान पर ग़लबा अता करे और यह सूरते हाल तकय्या में मुमकिन नहीं है।

इमामे महदी (अ0) की ग़ैबत इमामे हसन असकरी (अ0) की शहादत के बाद से शुरू के 70 साल ग़ैबते सुगरा कही जाती है। इसकी खुसूसियत यह है कि आपके 4 नाएबीन मुअय्यन थे और लोग उन्हीं के ज़रिए आपसे ताल्लुक रखते थे।

उसमान (रह0) बिन सईद मुहम्मद (रह0) बिन उसमान, हुसैन (रह0) बिन रुह, अली (रह0) बिन मुहम्मद समरी। यह सब लोग अपने ज़माने के राज़दार तरीन अफराद थे उनकी शख़्सियतें इल्म, तक़्वा, शुजाअत, सखावत, जोहद व वरअ और ख़िदमते ख़ल्क जैसे औसाफ से मुत्तसिफ थीं।

अली बिन मुहम्मद समरी की वफात से पहले आपके पास तौकीअ (ख़त) आयी जिसमें इमाम (अ0) ने फरमाया था:-

ऐ अली बिन मुहम्मद! अपने बाद किसी को नाएब न बनाना। छः रोज़ बाद तुम्हारा "यौमे मौऊद" (वादे का दिन) है।

मस्लहते खुदावन्दी की बिना पर ग़ैबते सुगरा ख़त्म हो जायगी और ग़ैबते कुबरा का सिलसिला जारी हो जाएगा और ऐसा ही हुआ।

इसके बाद कोई शख्स मुअय्यन नहीं था जिसको इमाम ने वकील व नायब बनाया हो और सीधे तौर पर मुलाकात की हो, अलबत्ता कुछ बाअज़मत अफराद जिन्होंने देखा है लेकिन मशिय्यते इलाही का यही तकाज़ा है कि कोई फौरन पहचान नहीं सका, इमाम की जानिब से जानने वालों और उलमा के पास तौकीआत और खुतूत भी आए हैं। जिससे वाज़ेह होता है कि हिदायत का सिलसिला ख़त्म नहीं हो सकता।

इस्हाक़ बिन याकूब ने मुहम्मद बिन उसमान के ज़रिए इमाम (अ0) से सवाल किया कि:- "ख़ास नाएबीन के बाद हम अपने मसाएल किस तरह हल करेंगे?"

इस्हाक़ बिन याकूब कहते हैं मैंने देखा इमाम (अ0) ने अपने मुबारक हाथ से इस तरह लिखा हुआ ख़त भेजा जिसका मज़मून यह है:- रावियाने किराम व उलमा व फुक्हाए दीन की तरफ रुजू करो उनसे मसाएल का हल दरयाफ़्त करो क्योंकि वह तुम्हारे लिये मेरी हुज्जत हैं और मैं खुदा की हुज्जत हूँ।

हदीसे मज़कूर उलमा व फुक्हाए दीन की अज़मत, उनकी ज़ददोज़ेहद, इज्तेहाद व फुकाहत, इरफान व इल्म की अज़मत को बयान कर रही है। मासूमीन (अ0) का हर वक़्त ताल्लुक़ ज़ाते बारी ताला से है और उलमा-ए-रुहानी का ताल्लुक़ मासूमीन व मुक़ररबीने खुदावन्दे आलम से है।

इमामे अस्र (अ0) की इताअत और क़ानूने इस्लाम से इस्तेबात का तकाज़ा यह है कि ग़ैबत में उनका दिफाअ किया जाए। सीरते अहलेबैते अतहार (अ0) को शेआरे हयात बनाने वाले उलमा-ए-रब्बानी की इताअत करें और उनकी आवाज़ पर लब्बैक कहें। उनके हम आवाज़ हो जाएँ, कुर्आन व इस्लाम के मसालेह और मनाफ़ेअ को अपने ज़ाती फायदों से आगे रखें।

इल्म हासिल करें और मुआशर-ए-इल्मी तैयार करें ताकि लश्करे वली-ए-अस्र की तादाद में इज़ाफ़ा हो। खुदाए बरहक़ से दुआ है कि इमाम (अ0) के ज़हूर में जल्दी फरमाए और हमें सच्चे मुन्तज़िरीने इमाम (अ0) में शुमार फरमाए। (इलाही आमीन)



# मौलाना डा० सै० अली मुहम्मद नक़वी: एक परिचय

मु० र० आबिद

डा० अली मुहम्मद नक़वी उन गिने-चुने लोगों में हैं जो ऊँचे घराने में जन्म लेते, ज्ञान के माहौल में जवान होते और जवानी की कगार से ही सुख्याति की उड़ान भरते हैं कि फिर पीछे मुड़कर नहीं देखते।

डा० अली मुहम्मद नक़वी, 'ख़ानदाने इज्तेहाद' नामी मशहूर घराने में 1953 ई० में पैदा हुए। पिता सैय्यदुल उलमा आयतुल्लाह मौलाना अली नक़वी (ताबा सराह) बड़े प्रख्यात धर्मगुरु, मुजतहिद, ज़ाकिर, लेखक और विचारक थे। उनके ज्ञान को देखते हुए अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी ने उन्हें अपने शीआ दीनियात विभाग की अध्यक्षता सौंपी थी।



सै० अली मुहम्मद नक़वी ने अपने पिता की देखरेख में शिक्षा पायी। अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी से एम०ए० (अंग्रेज़ी) भी किया। 1974ई० में उच्च धर्म शिक्षा के लिए इराक़ व ईरान गये। ईरान में वे एक विद्वान के रूप में उभरे। उनके आर्टिकिल फारसी भाषा की बड़ी-बड़ी पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। वे ईरान के शिक्षा मंत्रालय के आधीन पाठ्यपुस्तक बोर्ड के सदस्य हुए। वे तुरन्त ही एक विख्यात इस्लामी चिन्तक मान लिये

गये। उनकी फारसी में किताबें ईरान के ऊँचे-ऊँचे मशहूर प्रकाशन-केन्द्रों से छापी गयीं।

उनकी पहली किताब अल्लामा 'इक़बाल' के इस्लामी विचारों पर "इदियालोजी इन्क़िलाबी-ए-इक़बाल" (इक़बाल' की क्रान्तिकारी विचारधारा) थी। वे उन लोगों में हैं जिन्होंने ईरान में 'इक़बाल' की इस्लामी विचारधारा का परिचय कराया। उनकी दूसरी किताब "फरहन्दगे इस्तिलाहाते इस्लामी" इस्लामी शब्दकोष थी जो 'इन्तेशाराते इस्लामी

ईरान से प्रकाशित हुयी। उनकी तीसरी किताब "जामिआ शिनासिए गर्बगराई" (पश्चिमीकरण का समाजशास्त्र) है जो बड़े प्रसिद्ध प्रकाशनालय 'अमीरे कबीर पब्लिकेशन्स' की ओर से दो भागों में छापी गयी। यह किताब ओरिजिनल शोध पर आधारित है। उन्होंने पश्चिम से इस्लाम के टकराव के चरणों के बारे में एक नया विचार दिया। यह पुस्तक इस्लाम के सामाजिक विचार के अध्ययन लिए ईरान की युनिवर्सिटीयों में Reference Book

बन गयी। इससे सै0 अली मुहम्मद नकवी ईरान के बुद्धिजीवी सर्किल में सुपरिचित हुए। इस किताब का अरबी अनुवाद बेरुत से प्रकाशित हुआ।

लेकिन ईरान में उनकी शीर्ष सफलता उनकी उन चार पुस्तकों से आयी जो उन्होंने इस्लामी विचारधारा पर लिखीं और जिन्हें ईरान के शिक्षा मंत्रालय ने ईरान भर की यूनिवर्सिटियों में कक्षा IX, X, XI और बी0एड0 की पाठ्य पुस्तक के रूप में पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर दिया। वे पहले विदेशी और पहली भारतीय हैं जिन्हें यह सम्मान प्राप्त हुआ।

1984 ई0 में वे ब्रिटेन गये और तुलनात्मक धर्म पर एक शोध प्रोजेक्ट पर काम किया। यह काम "A Manual of Islamic Beliefs and Practice" (इस्लामी विश्वासों और आचार की हस्त-पुस्तक) के नाम से मुहम्मदी ट्रस्ट, लन्दन से प्रकाशित हुआ।

अपनी भारत वापसी के बाद तुलनात्मक धर्म के प्रोजेक्ट पर काम किया। वे भारतीय धार्मिक विचार और इस्लाम से उसकी तुलना के सर्वत्र अध्ययन पर लगे। यह काम लगभग दो हजार पेज के दो बड़े भागों में है। पहले भाग में प्राचीन भारतीय धार्मिक विचार का विश्लेषण और इस्लामी विचार से उसकी तुलना की गई है। दूसरे भाग में भारत के आधुनिक और समकालीन धार्मिक विचार का विश्लेषण है। यह काम फारसी भाषा में है और यह किसी मुस्लिम विद्वान द्वारा और इस्लामी दृष्टि से तुलनात्मक धर्म अध्ययन पर पहला विस्तृत काम है। जहाँ तक शोध के

स्तर, मूल विचार और प्रभाव की बात है सैय्यद अली मुहम्मद नकवी की हर छपी किताब असाधारण है और देखने योग्य है।

लेकिन उनका गौरवशाली प्रोजेक्ट अंग्रेज़ी में कुर्आन मजीद की एक व्यापक पर संक्षिप्त व्याख्या है। इसमें हर पारे पर एक-एक गठा भाग होगा। अन्तिम भाग विषय सूची (Subject Index) होगा। इसमें पूरे कुर्आन पाक का रोमन लिपि में वर्णान्तरण (Transliteration) होगा। इस उद्देश्य से लेखक ने वर्णान्तरण की नयी पद्धति बनाई है।

डा0 अली मुहम्मद का एक दूसरा उत्साही प्रोजेक्ट दस भागों में इस्लामी विचारधारा (Ideology) और आध्यात्मिकता का संकलन है।

सै0 अली मुहम्मद नकवी आल इण्डिया पर्सनल लॉ बोर्ड के संस्थापक-सदस्य और मिल्ली कौन्सिल ऑफ इण्डिया की कार्यकारिणी के सदस्य भी हैं। वह महत्वपूर्ण इस्लामी निकेतन (हौज़-ए-इलमिया) मदीनतुल उलूम, अलीगढ़ के सहसंस्थापक हैं।

उन्होंने एक इस्लामी वेबसाइट [www.ideonline.org](http://www.ideonline.org) भी शुरू की है, जो इस्लाम और आध्यात्म पर बहुत विचारवर्धक और शिक्षाप्रद वेबसाइटों में एक है। वे इस्लामिक इंस्टीट्यूट ऑफ डिस्टेन्स एजुकेशन (IIDE) के संस्थापक हैं।

आशा बल्कि विश्वास है कि भविष्य में और भी ज्ञान व शोध की नित्य नई उचाईयाँ प्राप्त होंगी।



इदारा

मुख्य समाचार

## हिज्बुल्लाह की जीत इस्लामी दुनिया की जीत

**इसराईल अब नाकामी के ज़ख्म चाट रहा है: आयतुल्लाह सै० अली खामेना-ई**

**बैरुत।** ईरान के सुप्रीम लीडर रहबरे मुअज़्ज़म आयतुल्लाहिल उज्जमा सैय्यद अली खामेना-ई मददजिल्लुशरीफ ने कहा है कि इसराईल के खिलाफ हिज्बुल्लाह की जीत تمام आलमे इस्लाम की जीत है। जिसके बाद अमरीका और इसराईल की तरफ से नये मशिके वुस्ता का मन्सूबा बर्बाद हो गया है। हिज्बुल्लाह के टेलीवीज़न पर जारी एक बयान में आयतुल्लाह खामेना-ई ने कहा कि जो लोग टैंक, गोला-बारूद और हवाई ताकत के बजाए ईमान की ताकत और खुदा पर भरोसा करते हैं उनकी जीत ज़रूर होती है। हिज्बुल्लाह ने खुदा पर भरोसा रखते हुए अपने से कई गुना ज़्यादा ताकत रखने वाले दुश्मन को बहुत बुरी शिकस्त से दोचार किया है। यहूदी रियासत जिसने ताकत के घमण्ड में लेबनानी अवाम को बेवजह मारा लेकिन हिज्बुल्लाह के मुजाहिदीनों ने इसराईली फौज को ऐसा मुँहतोड़ जवाब दिया कि वह अब नाकामी के ज़ख्म चाट रही है।

उन्होंने कहा यह कामियाबी सिर्फ हिज्बुल्लाह ही

की नहीं है बल्कि पूरी उम्मत मुस्लिमा की कामियाबी है। उन्होंने उम्मत मुस्लिमा से अपील की कि वह इसराईल की दहशतगर्दी से तबाह हाल लेबनानी अवाम की मदद करे।

उधर दूसरी तरफ लेबनान के राष्ट्रपति अमील लहूद ने हिज्बुल्लाह की भरपूर हिमायत का एलान किया है और कहा कि हिज्बुल्लाह अरब दुनिया की अकेली ताकत है जो इसराईल का मुकाबला करने की ताकत रखती है। और हिज्बुल्लाह को गैर मुसल्लह करना ठीक नहीं है। उन्होंने कहा कि हिज्बुल्लाह एक अवामी तहरीक है और अवामी तहरीक को गैर मुसल्लह करना बेअकली है। उन्होंने कहा कि हम इसराईल जैसी खूँखार हुकूमत के पड़ोस में रहते हैं जिससे हर वक़्त हमारे मुल्क की सलामती को ख़तरा बना हुआ है और इसराईल के बाहरी हमलों के मुकाबले के लिए इस अवामी तहरीक का हथियारबंद रहना लेबनान के हक़ में है।

## इसराईली जुल्म के खिलाफ जन्तर-मन्तर पर विरोध प्रदर्शन

**नई दिल्ली।** लेबनान पर बराबर चार तरफ़ा हमलों को लेकर इसराईल और अमरीका के खिलाफ जन्तर-मन्तर पर हिन्दुस्तान के मशहूर और नामवर उलमा, मुस्लिम तनज़ीमों के नुमाइन्दे, मस्जिदों के इमाम और तलबा ने काएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद नकवी साहब की कयादत में विरोध प्रदर्शन किया। इस मौके पर मौजूद प्रदर्शनकारियों को सम्बोधित करते हुए काएदे मिल्लत ने कहा कि इसराईल जो अमरीका के इशारे पर लेबनान में जुल्म व सितम जारी रखे हुए है, हम और हमारे मुल्क के लोग इसके खिलाफ एक होकर मज्मूत करते हैं। मौलाना ने कहा कि अमरीका इस्लामिक कल्बर को ख़त्म करना चाहता है। मौलाना ने एक अख़बार के हवाले से कहा कि जब बुश से पूछा गया कि यह हमला क्यों हो रहा है तो

उसने जवाब दिया कि लेबनान ने शराब, बार डाँस वगैरा पर पाबन्दी लगा दी है इसलिए वह पूरी तरह इस्लामी मुल्क हो गया लिहाज़ा इसराईल उस पर हमला कर रहा है। मौलाना ने कहा कि यह कहाँ का इन्साफ़ है कि मासूम बच्चों, औरतों और कमज़ोरों की जान ली जाय। याद रखिये सबसे बड़ा दहशतगर्द अमरीका है। और मुस्लिम मुल्क जो अमरीका के गुलाम बने हुए हैं उनको अपनी नींद से जागने की ताकीद की गई। साथ ही संयुक्त राष्ट्र को एक मेमोरेण्डम दिया गया जिसमें यह माँग की गई कि वह लेबनान और फिलस्तीन पर चारों तरफ से हो रहे हमलों को बन्द कराए और दुनिया पर यह साबित करे कि संयुक्त राष्ट्र एक प्रभावी संस्था है। इसके अलावा लेबनान, फिलस्तीन और इसराईल के बीच झगड़ों को बातीचीत के ज़रिए हल करवाया जाए।



## होशियार हो जाओ! बेशक हिज़्बुल्लाह ही ग़ल्बा हासिल करने वाला है: कुर्आने करीम

**लखनऊ।** लेबनान पर जारी इसराईली हमलों के खिलाफ मुस्लिम उलमा-ए-हिन्द, नूरे हिदायत फाउण्डेशन, पासदाराने हुसैन और मिल्लते जाफरी की तरफ से काएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद साहब, शहरे काज़ी अबुलइरफान फिरंगी महली और दूसरे उलमा-ए-किराम की कयादत में हज़ारों की तादाद में मुसलमानों ने एक विरोधी जुलूस निकाला। यह विरोधी जुलूस बड़े इमामबाड़े से छोटे इमामबाड़े रवाना हुआ। जुलूस में लोग शेर हिज़्बुल्लाह हसन नसरुल्लाह लिखी हुई तख्तिरियाँ लिये हुए थे और हिज़्बुल्लाह-नसरुल्लाह जेहाद करो हम तुम्हारे साथ हैं, नारा-ए-तकबीर, नारा-ए-रिसालत, नारा-ए-हैदरी के साथ अमरीका इसराईल मुर्दाबाद के नारों से फिज़ा गूँज उठी। इसके अलावा ईरान, अहमदी नेजाद ज़िन्दाबाद के नारे भी लगे।

रुमी गेट पर एक जलसा भी हुआ जिसको कई मुस्लिम रहनुमाओं ने सम्बोधित किया। काएदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद साहब ने भीड़ को सम्बोधित करते हुए कुर्आने करीम की एक आयत को विषय करार दिया जिसका तर्जुमा है कि “होशियार हो जाओ! बेशक हिज़्बुल्लाह ही ग़ल्बा हासिल करने वाला है।” काएदे मिल्लत ने लेबनान और इसराईल की जंग के बारे में कहा कि जीत हिज़्बुल्लाह की ही होगी। लेबनान में हिज़्बुल्लाह की मात्रा सिर्फ पाँच हज़ार है लेकिन उनके ईमान की ताक़त के आगे दो लाख अमरीकी और इसराईली ज़ालिम फौज नाकाम है। अमरीका हथियारों की सप्लाई कर रहा है एक रात में चार-चार हज़ार बम गिराए जा रहे हैं लेकिन पाँच हज़ार मुजाहिदीन सर पर कफन बाँधकर निकल आए हैं और दुनिया का सबसे बड़ा आतंकवादी एक महीने में उनका कुछ बिगाड़ न सका ऐसे में अगर पूरी दुनिया के मुसलमान एक हो जाएँ तब इस्लाम

मुखलिफ़ ताक़तों के अन्जाम का अन्दाज़ा आप खुद ही लगा सकते हैं। कुछ मुसलमानों को इसराईल ने अपना एजेण्ट सिर्फ इसलिए बनाया ताकि वह रसूल (स०) की भविष्यवाणी को झूठा साबित कर सकें। हज़रत अली (अ०) के हवाले से उन्होंने बताया कि मुझ से मेरे रसूल (स०) ने फरमाया कि पूरी ज़मीन पर यहूदियों को कोई स्थायी ठिकाना नहीं। उनकी हुकूमत काएम होगी मुसलमान हुक्मरान उनसे टकराकर हारते रहेंगे लेकिन जब सारी दुनिया के मुसलमान एक होकर उन पर हमला करेंगे तो वह दुनिया से बिलकुल मिट जाएँगे। इस भविष्यवाणी को झूठा साबित करने के लिए उन्होंने मुसलमानों को आपस में लड़वाने के लिए मुसलमानों को ही अपना एजेण्ट बना लिया। उनमें से कुछ एजेण्ट लखनऊ में भी अपना काम अन्जाम दे रहे हैं इसलिए हमें इस साज़िश से होशियार रहने की ज़रूरत है। काज़ी-ए-शहर अबुलइरफान फिरंगी महली ने कहा कि हर मस्जिद के इमाम की ज़िम्मेदारी है कि वह अल्लाह का पैग़ाम दे और आपस में एक रहने की तालीम दे जो ऐसा न करे उसे इमामत न करने दी जाए और उसको उसकी ग़लती की सज़ा ज़रूर दी जाए।

जल्से की निज़ामत मौलाना मुस्तफा हुसैन नक़वी असीफ़ जाएसी ने की। जिसमें मौलाना ने अमरीका और इसराईल के खिलाफ न बोलने वालों को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि मालूम नहीं क्यों कुछ लोग अमरीका और इसराईल जैसे ज़ालिम व जाबिर के खिलाफ और मज़लूम की हिमायत में बोलने से डरते हैं। उन्होंने कहा कि घबराओं नहीं अमरीका व इसराईल उस ज़मीन पर पहुँच चुके हैं जहाँ उनके पूरी तरह मिट जाने का वक़्त करीब आ गया है। आख़िर में हिज़्बुल्लाह व शेर हिज़्बुल्लाह हसन नसरुल्लाह और लेबनान के मोमिनीन के लिए दुआ की अपील की गई।

## मजलिसे तरहीम हज़रत गुफ़रान मआब (रह०)

**लखनऊ।** 15, अगस्त मुजदिदुशरीअत, मुहयियुल मिल्लत, माही सूफ़ियत व अख़बारियत आयतुल्लाहिल उज़मा बहरूल उलूम सैय्यद दिलदार अली गुफ़रान मआब (रह०) की मजलिसे तरहीम खुद जनाब ही के काएम किये हुए इमामबाड़े में हुई। मजलिस का आगाज़ मौलाना हैदर अली ने तिलावते कलाम पाक से किया, तिलावत के बाद मौलाना असीफ़ जायसी ने हज़रत गुफ़रान मआब और उनके पाँच मशहूर बेटों की ज़िन्दगी और कारनामों से मुताल्लिक़ मक़ाला पढ़ा जिससे सुनने वालों की मालूमात में काफी बढ़ोत्तरी हुई। इसके बाद ख़तीबे अहलेबैत मौलाना मुहम्मद हुज्जत साहब

फ़िक्ला उस्ताद वसीफ़ा अरबी कालेज फैज़ाबाद ने मजलिस को सम्बोधित करते हुए हज़रत गुफ़रान मआब (रह०) और उनकी नसल के फ़ुक़हा व मुजतहेदीन के इलमी व अमली कारनामों को अपने ख़ास अन्दाज़ में बयान करके मजलिसे सैय्यदुशशोहदा हज़रत इमाम हुसैन (अ०) के मसाएब पर ख़त्म किया।

सुनने वालों की मेज़बानी के लिए इमामबाड़े के मुतवल्ली काएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद नक़वी खुद भी प्रोग्राम के ख़त्म होने तक मौजूद रहे। मजलिस के बाद मोमिनीन ने माहज़र भी तनावुल फरमाया।